Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

UGC Approved Monthly Journal

VOL-IV ISSUE-VIII Aug. 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - IV Issue-VIII AUGUST 2017 ISSN 2349-638x Impact Factor 3.025

'धर्म के नाम पर धोखा' नाटक की प्रासंगिकता

विजयकुमार किशनराव धामणगावकर
महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय,
उदगीर जि.लातुर (महाराष्ट्र)

साहित्य का सृजन समाज सापेक्ष होता है। इसलिए साहित्य और समाज का अटूट संबंध होता है। इसलिए साहित्य में समाज का चित्रण देखने को मिलता है। साहित्य की हर विधा में व्यक्ति का स्थान वैशिष्ट्यपूर्ण रुप में होता है। साहित्यकार साहित्य के माध्यम से समाज की अनेकविध समस्याओं पर प्रकाश डालता है। साहित्य व्यक्ति जीवन का अभिन्न अंग है। साहित्य की उपन्यास, काव्य, आत्मकथा, कहानी, एकांकी आदि विधाओं की अपेक्षा नाटक विधा सशक्त रही है। हिंदी दलित साहित्य में भी नाटक विधा ने विशेष स्थान बनाया है।

नाटक विधा पाठक के मन पर प्रभाव डालनेवाली विधा है। दलित साहित्य भी इस विधा के प्रभाव से दूर नहीं रहा है। दलित साहित्य की नाटक विधा में भी लेखन कार्य का परंपरा का निर्वाह किया जा रहा है। जिसमें अछूतानंद हरिहर, रत्नाकर बंधु त्रिशरण, माता प्रसाद, कर्मशील भारती, मोहनदास नैमिशराय, सुशीला टाकभौरे आदि नाटककार है।

माता प्रसाद ने दलित नाटक साहित्य को लगभग सोलह नाटक दिए हैं। जिसमें अछूत का बेटा, धर्म के नाम पर धोखा, वीरांगना झलकारीबाई, वीरांगना ऊदादेवी पासी, प्रतिशोध, तडप मुक्ति की, अंतहीन बेडियाँ, धर्म परिवर्तन, रैदास से सन्त शिरोमणि गुरु रविदास, हम एक हैं, जातियों का जंजाल, दिल्ली की गद्दी पर खुसरो भंगी, राजनीतिक दलों में दलित एजेंडा, दलितों का दर्द, घुटन, महादानी राजा बलि है। माता प्रसाद के नाटकों में दलित चेतना के साथ-साथ समसामायिक समस्याओं का चित्रण भी देखने को मिलता है।

'धर्म के नाम पर धोखा' माता प्रसाद का चर्चित नाटक है। जिसका प्रकाशन सन् १९७७ ई. में हुआ था। इसमें कुल तीन अंक और १९ दृश्य हैं। इस नाटक की प्रस्तावना में डॉ.लालसाहब सिंह 'प्राचार्य' ने लिखा है-''माननीय माता प्रसाद जी को प्रगतिशील नाटककार कहा जाए तो अनुचित न होगा। उनका मत है कि, 'जरुरत है उस रोशनी की जिसका सहारा लेकर हम कुछ दूर आगे बढ सके। ' इसलिए बुध्दिवादी दृष्टिकोण उनके 'नाटक द्वय' में परिलक्षित हैं। इस नाटक में उन्होंने धर्म की आड में कुचक्र रचने वाले बाबाओं का पर्दाफाश किया है। इन्होंने सामान्य जनता को, बहोरी के सांप बाबाओं से सावधान रहने के लिए सचेत कर दिया है। देश में उभरते हुए नेताओं के मुखौटे को भी मंत्री महोदय के माध्यम से चित्रित किया है। इस नाटक के प्रत्येक पात्र किसी न किसी सामाजिक विकृति से आक्रांत है और अपने किए हुए पाप पर पर्दा डालने की चेष्टा कर रहे हैं। इसमें संदेह नहीं कि लेखन ने कीचड से सनी इस सामाजिक व्यवस्था का चित्र बडी ही निर्भिकता से उतारकर रख दिया है और इस सामाजिक दूषित वातावरण में शुद्ध वायु का प्रवेश करने का प्रयास किया है।''[१]

नाटक के प्रथम अंक में कुल सात दृश्य हैं। प्रथम दृश्य में राम मनोहर और प्रभावती का संवाद है। राम मनोहर सप्लाई विभाग से भ्रष्टाचार के कारण नौकरी से निकाला गया युवक है। प्रभावती एक विधवा है जो राम मनोहर के साथ भाग जाती है। राम मनोहर के खिलाफ भ्रष्टाचार के कारण हाईकोर्ट में मुकदमा चल रहा है। दोनों भागकर वाराणसी चले जाते है। द्वितीय दृश्य में राम मनोहर और प्रभावती को माधव और जग्गा वाराणसी में मिल जाते हैं। माधव सुशिक्षित बेरोजगार युवक है। जो नौकरी के लिए दर-दर की ठोकरे खा रहा है। जग्गा एक पहलवान है। जिसको दो बार जेल हो चुकी है। यह चारों मिलकर एक योजना बनाते है। जिसमें धर्म को आधार बनाकर धन कमाना इनका मूल उद्देश्य होता है। तिसरे दृश्य में चरएं ग्राम के जंगी चौधरी और उनकी स्त्री लक्ष्मीना और उनका बेटा रामू बैठे हैं।

यहाँ पर साधुवेष में माधव आ जाता है। माधव इसके बाद धर्मदास यह नाम बदलकर साधू बन जाता है। धर्मदास वैराग्यपूर्ण जीवन बिताने के लिए अपने भजन के माध्यम से प्रबोधन करता है।

प्रस्तुत अंक के चौथे दृश्य में धर्मदास ध्यानमग्न अवस्था में बैठा है। इस गाँव के पास पीपल के वृक्ष में दैवी शक्ति छिपी होने की जानकारी धर्मदास देता है। गाँव के जंगी चौधरी तथा अन्य लोगों को धर्मदास पर विश्वास दिखाने के लिए प्रभावती जग्गा को अपना बाप बनाती है और उसके कोढ के रोग का इलाज धर्मदास ने किया है ऐसा बताती है। उस पीपल के पेड में दैतावीर का निवास है ऐसा धर्मदास बताते है। इसलिए वहाँ पर मेला लगाने की बात करते हैं। इसके जिए जंगी चौधरी तथा गाँव के अन्य लोग तैयार हो जाते है। पाँचवे दृश्य में धर्मदास, जग्गा, प्रभावती मिलकर गाँव के लोगों का शोषण करते है। प्रभा औरतों में जाकर धर्मदास का प्रचार करती है। इसके कारण बहुत सारा धन इकट्ठा हो जाता है। स्त्रियों तथा अनपढ लोगों को यह लोग बेवकूफ बनाते है। इस धनराशि से राम मनोहर आश्रम खोलना चाहता है। जिससे वह अपना कार्य तेज रफ्तार से कर सके।

प्रथम अंक के छठे दृश्य में राम मनोहर महात्मा आनन्द देव बाबा बन जाता है। इसमें जग्गा बाबा के प्रचार की कमान सँभाला हुआ है। जग्गा एक सुशिक्षित युवक की तलाश में है, जो प्रचार का कार्य कर सके। त्रिभुवन नामक एक सुशिक्षित बेरोजगार युवक उसे मिल जाता है। प्रभावती इस दृश्य में आश्रम माता बन जाती है। त्रिभुवन बाबा के प्रवचन समारोह का संचलन करता है। जिसमें वह गुरु की महिमा को मंडित करता है। बाबा आनन्द देव अपने प्रवचन के माध्यम से गुरु की महिमा, मन की शांति आदि बातों पर अपना उपदेश देते है। इस प्रवचन के बाद बाबा आनन्द देव आश्रम खोलने की इच्छा भक्तों के सामने व्यक्त करते है। सेठ कन्हैयालाल और मोती लाल आश्रम बनाने के लिए धन देने के लिए तैयार हो जाते है। सातवें दृश्य में त्रिभुवन आनन्द देव बाबा को उ.प्रदेश सरकार के मिनिस्टर कमला शंकर चौधरी के आने की जानकारी देता है। कमला शंकर बाबा के आशीर्वाद से ही मंत्री बन गया है। बाबा की ओर से आश्रम माता कमला शंकर को सेवा का मौका देती है। आश्रममाता कमला शंकर से कहती है-

''आश्रममाता -हमारी सेवा की जरुरत नहीं है। हाँ! बाबा की इच्छा है कि एक बहुत बडा यज्ञ यहां किया जाए, जिससे वातावरण में जो गंदगी आ गई है, उसे शुद्ध किया जा सके और २० हजार साधू महात्माओं का भंडारा किया जा सके। तुम सक्षम हो, इसमें तुम्हारी सहायता की जरुरत है।''

कमला शंकर - इसमें कौन-कौन सा कितना सामान लगेगा, आप हमें बता दे।

आश्रममाता - इसमें १०१ क्विंटल चावल, १०१ क्विंटल, जौ, १०१ कनस्तर शुध्द घी,
१०१ क्विंटल आटा, १०१ क्विंटल दूध, तिल तथा बहुत सा सामान लगेगा।

कमला शंकर-आप सामानों की सूची बनाकर मुझे दे दें। सब इंतजाम हो जाएगा। हमारी कोआपरेटिव की संस्थाओ का सूबे भर में जाल बिछा है। आप यज्ञ की तारीख तय करें। चिंता की कोई बात नहीं।

आश्रम माता -तमसे हमें यही आशा थी। हाँ! आश्रम के लिए सडक, बिजली, पानी और टेलीफोन-व्यवस्था भी होना जरुरी है।''[२]

इस प्रकार समसामायिक राजनीतिक स्थिति का चित्रण इस अंक के अंत में देखने को मिलता है।

नाटक के द्वितीय अंक में कुल छह दृश्य है। पहले दृश्य में जग्गा बेसहारा लडकियों को बहला-फूसलाकर अगुआ करने का कार्य करता है। रमपत्ती नाम की लडकी ससुराल से परेशान होकर आयी है। उसके पानी में कुछ दवाई डालकर वह उसे देता है। वह बेहोश हो जाने पर निर्जन स्थान पर ले जाकर एक कमरे में बंद कर देता है। दूसरे दृश्य में भी कामिनी, करमी, जानकी, कुसुम आदि लडकियों को भी जग्गा बंदी बना लेता है। तिसरे दृश्य में आनन्द देव और आश्रम माता बैठी हैं। जग्गा उनको अपने कारोबार के बारे में बताता है। अगुआ की हुई लडकियों को लेकर आनन्द देव, आश्रम माता और जग्गा का संवाद है-

''आश्रम माता - इनको कब तक बंद रखोगे। तुम तो कह रहे थे कि दो के सौदे की बातचीत चल रही है उसका क्या हुआ?''

जग्गा - बात तय है। सोचता हूँ आज रात में करमी देवी और रमपत्ती को यही ले आऊं। आप भी उन्हें तैयार कर दें।

आनन्द देव - आश्रम में उनको लाना ठीक नहीं होगा, बदनामी होगी। तुम्हारे दो ग्राहक हैं एक है पंडित सदानन्द पांडे इनके लिए कर्मी को शुक्लाइन कहकर सौदा तय करो और रमपत्ती को रमपत्ती सिंह चौहान ठाकुर बनाकर झगडू सिंह के हवाले करो। हाँ! करमी को बता देना वह अपने को डोम की लडकी भूलकर न कहे और रमपत्ती भी भर, की लडकी अपने को न बताए।''[३]

जग्गा इस प्रकार लडकियों को बेचने एवं खरीदने का कार्य करता है। आश्रम माता जग्गा के कहने पर उन सभी लडकियों को इस व्यवहार को लेकर समझाने जाती है। आश्रममाता उन लडकियों की भावनाओं को आधार बनाकर उनकी मानसिकता को तैयार करने का प्रयास करती है। चौथे दृश्य में कुसुम और कामिनी इस कैदखाने से बाहर निकलने के लिए रोशनदान से बाहर चिट्ठी लिखकर फेंकती है। जग्गा इन दोनों के इंतजाम की बात भी एक व्यापारी से कर रहा है। पाँचवे दृश्य में आनन्द देव, धर्मदास, जग्गा, आश्रम माता, त्रिभुवन आदि का संवाद है। पुलिस का शक आनन्द देव बाबा की गतिविधियों पर है। जग्गा को आनन्द देव बाकी की लडकियों की व्यवस्था करने को कहता है। पुलिस का ध्यान अपनी ओर हटाने के लिए आनन्द देव दंगे की योजना बनाता है और कहता है-

''आनन्द देव - त्रिभुवन! तुम एक खुशखत उर्दू जानने वाले की तलाश करो। जो रात में शहर की दीवालों पर नसबंदी के खिलाफ उर्दू में नारे लिखे, इसके लिए मैं पांच सौ रुपया देने को तैयार हूं।

जग्गा - मास्टर, इससे क्या होगा?

आनन्द देव - जब नारे लिख उठेंगे, तो जगह-जगह इसकी चर्चा होगी। हिंदू-मुस्लिम में टेंशन पैदा होगा। ऐसे ही मौके पर किसी मंदिर में एक गाय कटवा कर फेंक दो। वहां लोगों को इकट्ठा करके मुसलमानों के खिलाफ भडकाओ और उसके बाद वहाँ से खिसक जाओ। इससे हिंदू-मुस्लिम दंगा होगा। इसके बाद जगह-जगह झूठी-झूठी खबरें फैलाओ।''[४]

इस प्रकार की अपनी तरफ से दूसरी तरफ ध्यान बटाने के लिए आनन्द देव योजना बनाता है। छठे दृश्य में आश्रम माता और आनन्द देव भयभीत होकर बैठे हैं। आनन्द देव देश छोडकर बाहर देश में जाने की तैयारी करता है। देश छोडने में अगर नाकाम रहे तो स्त्रियों और बच्चों के साथ अपने समर्थकों को सरकार के विरुध्द उकसाने की योजना बनाते है।

नाटक के तीसरे अंक में कुल छह दृश्य हैं। नेहरु युवक केंद्र समारोह के संयोजक शमशीर हसन है। अजय कुमार यह युवक नेता है। नेहरु युवक केन्द्र के माध्यम से मानवता, सांस्कृतिक क्रांति करने का संकल्प इस केंद्र के सदस्य करते है। दहेज, जाति-पांति को यह मिटाना चाहते है। साथ ही वृक्ष लगाकर पर्यावरण रक्षा की ओर भी वह ध्यान देना चाहते है। देवी-देवताओं या धर्म के नाम पर शोषण करने वाले धर्म आडंबरी लोगों पर भी वह निगाह रखना चाहते है। शहर से गायब हुई लडकियों के गिरोह का पर्दाफाश इस केन्द्र के माध्यम से वह करना चाहते है। दूसरे दृश्य में श्रीकांत और शमशीर रास्ते से चल रहे है। सामाजिक, राजनीतिक आदि विषयों पर दोनों चर्चा करने लगे है। श्रीकांत शमशीर को बताता है कि इस मकान से कुछ गिरा है। वह चिट्ठी शमशीर हसन पढता है, जिसमें कामिनी और कुसुम की रक्षा हेतु जानकारी लिखी है।

तीसरे दृश्य में शमशीर हसन उस चिट्ठी को लेकर कोतवाली पहुँचता है। साथ में श्रीकांत भी है। उस चिट्ठी के विषय के अनुसार उस बंद कमरे के आस-पास सादी वर्दी में कुछ सिपाही कोतवाल तैनात करता है। चौथे दृश्य में जग्गा एक-एक हजार में दोनों लडकियों का सौदा करता है। मुन्नू और नान्हू उन दोनों को खरीदना चाहते है। उतने में कोतवाल इन तीनों को पकड लेते है। कामिनी जग्गा को पहचान लेती है। पाँचवे दृश्य में श्रीकांत और कामिनी देवी का परिचय हो जाता है। इतने दिनों से गायब होने के कारण समाज हमें नकार देगा इस बात को लेकर कामिनी परेशान है। श्रीकांत कामिनी के सामने शादी करने का प्रस्ताव रखता है। इतने में बाबा आनन्द देव तथा त्रिभुवन को हथकडी लगाकर कोतवाल लेकर आते है। आश्रम माता, धर्मदास आदि को भी गिरफ्तार किया जाता है। उसी समय सरकारी पार्टी के मंत्री का टेलीफोन आ जाता है। वह बाबा को छोडने के लिए कहते है, क्योंकि बाबा उस मंत्री के गुरु है। श्रीकांत के कहने पर कोतवाल अपनी ड्युटी निर्भयता से निभाता है। श्रीकांत उस मंत्री की शिकायत प्रधानमंत्री से करता

है। इसकी खबर वह जिलाधीश को भी देता है। छठे दृश्य में अदालत को दिखाया गया है। जिसमें जज इन लोगों को सजा सुनाता है। जज सजा सुनाते हुए कहते हैं-

''जज- मैंने इस मुकदमे में वादी तथा प्रतिवादी दोनों पक्षों के बयान सुने। मुलजिमान आनन्द देव बाबा, जग्गा, प्रभादेवी और धर्मदास की सफाई सुनी। वादी की तरफ से इकबाली गवाह त्रिभुवन मुन्नू और नान्हू की गवाही सुनी शमशीर हसन, श्रीकांत और कोतवाल के बयान सुने। दोनों पक्षों के वकीलों की बहस सुनी। सभी बातों पर विचार करने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि इस मुकदमें में प्रतिवादी की तरफ से जो सफाई दी गई है, वह संतोषजनक नहीं है इसलिए ताजी रात हिंद के अंतर्गत तथा डी.आई.आर. के अंतर्गत अभियुक्त राम मनोहर उर्फ आनन्द देव बाबा और जग्गा को दफा ४१०, ३६६, ३७६ और ७ सी के अंतर्गत ६ महीने ३ वर्ष की सश्रम कठोर कारावास की सजा दी जाती है। सभी सजाएं एक साथ ही चलेंगी। अभियुक्ता प्रभादेवी उर्फ आश्रम माता को दफा ४२० व ३६३ के अंतर्गत ३ वर्ष की कठोर कारावास दिया जाता है। अभियुक्त धर्मदास और त्रिभुवन को संदेह का लाभ देकर रिहा किया जाता है। नान्हू और मुन्नू को बाइज्जत रिहा किया जाता है।''[५] इस प्रकार नाटक यहाँ पर समाप्त हो जाता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जाता सकता है कि, माता प्रसाद का 'धर्म के नाम पर धोखा' यह समसामायिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि समस्याओं को लेकर चलनेवाला प्रासंगिक नाटक है। नाटक के प्रथम अंक में विधवाओं के साथ दुर्व्यवहार की समस्या को प्रभावती के माध्यम से उठाया गया है। भ्रष्टाचार की समस्या को राम मनोहर के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। ऐसी व्यवस्था के कारण ही ऐसे मुजरिम तैयार हो जाते है। माधव के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था और बेरोजगारी पर माता प्रसाद ने करारा-व्यंग्य कसा है। धर्म के नाम पर साधु बनकर धन इकट्ठा करने की बात को भी नाटक में उभारा गया है। गाँव की भोली-भाली जनता अंधश्रद्धा का शिकार बन जाती है। इसको भी नाटक में बताया गया है। राजनीति में मंत्रियों की धर्मभीरु प्रवृत्ति को भी उठाया गया है। समाज में आज भी यह समस्याएँ हमें देखने को मिलती है। आज भी समाज में ऐसे मंत्री, साधू, अशिक्षित बेरोजगार आदि देखने को मिलते है।

नाटक के दूसरे अंक में असहाय महिलाओं को उठाकर बेचने की कुप्रवृत्ति को नाटककार माता प्रसाद ने जग्गा के माध्यम से दिखाया है। उसमें भी दलित महिलाओं को उनकी मजबूरी का फायदा उठाकर उन्हें सवर्ण बनाकर, नाम बदलकर बेचने को दर्शाया है। यह सभी समस्याएँ समाज में आज भी देखने को मिलती है। अपने स्वार्थ के लिए दंगे-फसाद करने वाले साधूओं का पर्दाफाश नाटककार ने किया है। यह दंगे-फसाद आज भी समाज में निर्माण किए जाते है। इसके पीछे सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ ही होती है।

नाटक के तीसरे अंक में नेहरु युवक केंद्र के माध्यम से सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक पर्यावरणीय समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया गया है। ऐसी समाजसेवी संस्थाओं के कारण राम मनोहर उर्फ आनन्द देव बाबा, प्रभादेवी उर्फ आश्रम माता तथा जग्गा जैसे लोग कानून के गिरफ्त में आ जाते है। इस नाटक की यह समस्याएँ तात्कालिक न होकर प्रासंगिक है। नाटक को पढते समय प्रमाता इस नाटक के साथ साधारणीकृत होके जुड जाता है। इसलिए 'धर्म के नाम पर धोखा' यह प्रासंगिक नाटक है।

संदर्भ

१) धर्म के नाम पर धोखा- माता प्रसाद, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रस्तावना, पृ.०७
२) वही, पृ.सं.२८
३) वही, पृ.सं.३३
४) वही, पृ.सं.३८-३९
५) वही, पृ.सं.३५